केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
जनकपुरी, नई दिल्ली
स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम –
पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपिशास्त्र

प्रस्तावना

पाण्डुलिपिविज्ञान के अन्तर्गत प्राचीन हस्तलिखित प्रलेखों का वैज्ञानिक एवं संरचनात्मक अध्ययन किया जाता है। व्यापक अर्थ में किसी भी प्रकार के आधार पर लिखित पाठ्यसामग्री या दस्तावेज जिनमें अभिलेख, वृक्ष के पत्रों पर लिखित लेख, धातुपत्रों पर उत्कीर्ण लेख, हस्तलिखित ग्रन्थ, तथा विविध प्रकार की पुरातात्विक वस्तुओं पर प्राप्त लेख आदि है, यह सभी पाण्डुलिपिविज्ञान के क्षेत्र में समाहित हैं। किसी भी देश या संस्कृति की गौरवपूर्ण विरासत इन्हीं प्राचीन लेखों के द्वारा उजागर और भावी पीढ़ी तक संक्रान्त होती है। प्राचीन पाण्डुलिपि ग्रन्थ हमारी बौद्धिक सम्पदा के संवाहक हैं। पाण्डुलिपिविज्ञान में प्राचीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण, संग्रहण, सूचीकरण, परिरक्षण संरक्षण –, सम्पादन, पाठभेद, समीक्षात्मक ग्रन्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आदि विषयों का अध्ययन समाहित है। आज पाण्डुलिपिविज्ञान को विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाता है।

पाण्डुलिपिविज्ञान यद्यपि एक स्वतन्त्र विद्याशाखा है परन्तु इसका अनेक विषयों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अन्य अनेक विषयों के साथ ही पाण्डुलिपि ग्रन्थों और पुरालेखों को पढ़ने के लिए पुरालिपिशास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता होती है, अतः यह पाण्डुलिपि विज्ञान का अनिवार्य अंग है। प्राचीन लिपियों में लिखित इन पुरालेखों का अध्ययन, शोध तथा प्रकाशन पुरालिपिशास्त्र के ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। पाण्डुलिपिविज्ञान के अध्ययन से अध्येता के बौद्धिक स्तर में वृद्धि होती है। इसके साथ ही पाण्डुलिपियों में निहित प्राचीन ज्ञान परम्परा के संरक्षण, उस पर शोध तथा उनकी प्रांसगिकता की समझ भी उत्पन्न होती है। यह शोधप्रविधि से सम्बद्ध उत्तम कौशल को विकसित करने में भी सहायक है।

[1] दृष्टि एवं लक्ष्य -(Vision & Mission)

01. इस पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की है, जिससे अध्येता में हस्तलेखों की पहचान करने, संरक्षण करने तथा सूचीपत्रों के निर्माण की विधियों को सीखने की क्षमता उत्पन्न हो सकेगी।

.02यह पाठ्यक्रम अध्येता में पाण्डुलिपि ग्रन्थों के प्राथमिक प्रकाशन एवं पाठसमीक्षात्मक सम्पादन युक्त प्रकाशन की प्रविधियों के कौशल को विकसित करने में सहायक होगा।

.03इस पाठ्यक्रम की संरचना के अनुसार अध्येता को पाण्डुलिपि विज्ञान के सभी पक्षों के साथ, पुरालिपियों का, ग्रन्थ सम्पादन एवं प्रकाशन प्रक्रियाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा।

.04यह पाठ्यक्रम अध्येताओं में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बद्ध प्रत्येक क्षेत्र में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के खोज, सम्पादन, शोध एवं प्रकाशन की दिशा में रुचि उत्पन्न करने में सहायक होगा।

[2] पाठ्यक्रम उद्देश्य -(Aims and Objective)

(1) भारत की प्राचीन ज्ञान परम्परा की स्त्रोत सामग्रियों जैसे अभिलेख –, पाण्डुलिपियाँ, धातुपत्रलेख, पटलेख,मुद्रालेख आदि का संग्रह , संरक्षण और शोध करना तथा अप्रकाशित पाण्डुलिपि ग्रन्थों का प्रकाशन करना।

(2) अध्येताओं को पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपियों का प्रशिक्षण प्रदान करना।.

(3) पाण्डुलिपियों के सम्पादन का सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान करना|

(4) पाण्डुलिपि ग्रन्थों के परिरक्षण – संरक्षण की प्रविधियों का ज्ञान प्रदान करना|

(5) समीक्षात्मक ग्रन्थ सम्पादन की प्रविधियों का उदाहरणों के साथ ज्ञान प्रदान करना|

[3] पाठ्यक्रम फलितांश - (COURSE OUTCOMES)

(1) यह पाठ्यक्रम ऐसा मानव संसाधन निर्मित करने में सहायक होगा , जो भारत की बौद्धिक ज्ञान संपदा को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित एवं प्रकाशित करने की दिशा में प्रयत्नशील तथा सामर्थ्य युक्त होगा |

(2) इस पाठ्यक्रम द्वारा प्रगत वैज्ञानिक प्रविधि के ज्ञान से युक्त प्रशिक्षित विद्वान उपलब्ध होंगे , जो भारतीय ज्ञान के स्रोतभूत अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों के अन्वेषण और शोध की दिशा में कार्य करते हुए , इस क्षेत्र में अभाव को पूर्ण करेंगे |

(3) इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने वाले अध्येता पाण्डुलिपि विज्ञान के विविध क्षेत्रों के साथ ही पाण्डुलिपि संग्रहण एवं संरक्षण विधियों के ज्ञान से युक्त होंगे |

(4) इस पाठ्यक्रम के अध्येता को भारत की अनेक प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण लिपियों का तथा उनके विकासक्रम के इतिहास का ज्ञान होगा |

(5) इस पाठ्यक्रम के अध्येता पाण्डुलिपि ग्रंथ सम्पादन तथा समीक्षात्मक ग्रंथ सम्पादन करने में सक्षम होंगे |

[4] रोजगार के अवसर – (CAREER OPPORTUNITIES)

(1) इस पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण के उपरान्त अध्येता को पाण्डुलिपि ग्रन्थों को पढ़ने , उनका व्याख्यान करने के साथ ही उनके सम्पादन एवं प्रकाशन की विशेषज्ञता प्राप्त होगी | इसके द्वारा अध्येता को सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में हस्तलेख संग्रहालयों में हस्तलेख विशेषज्ञ एवं शोध कर्ता के रूप में कार्य करने का अवसर मिलेगा |

(2) अध्येता को इंडोलोजिकल स्टडी सेंटर्स तथा शोध केन्द्रों में कार्य के साथ ही विभिन्न पब्लिशिंग हाउस जो प्राचीन ज्ञान के प्रकाशन कार्य करते हैं, उनके साथ कार्य करने का अवसर उपलब्ध होगा |

(3) अध्येता लिपि प्रशिक्षक के रूप में भी शिक्षण संस्थाओं तथा NGO's के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे |

[5] पाठ्यक्रम विवरण - (COURSE DETAILS)

पाठ्यक्रम नाम	– स्नाकोत्तर डिप्लोमा – पाण्डुलिपि विज्ञान एवं पुरालिपि शास्त्र
अवधि	– एक वर्ष
पाठ्यक्रम स्वरूप	– सत्रार्द्ध (semester)
पाठ्यक्रम अर्हता	–
अनिवार्य योग्यता	– किसी भी विषय से स्नातक की उपाधि प्राप्त व्यक्ति इस पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकता है	
वांछनीय योग्यता	– संस्कृत भाषा का ज्ञान
शिक्षण विधि	– ऑफलाइन तथा ऑन लाइन
परीक्षा विधि	– ऑफलाइन
शिक्षण माध्यम	– संस्कृत, हिन्दी, अँग्रेजी

[6] शिक्षण प्रविधि-

इस पाठ्यक्रम के शिक्षण के लिए छात्र केन्द्रित शिक्षण अधिगम एवं अनुभवात्मक अधिगम प्रविधि का उपयोग किया जाएगा। यह डिप्लोमा पाठ्यक्रम छः माह के दो सत्रार्द्ध में विभक्त होगा | प्रथम सत्रार्द्ध में पाण्डुलिपि विज्ञान का सामान्य परिचय होगा | द्वितीय सत्रार्द्ध में सभी विषयों का विशिष्ट अध्ययन होगा | प्रत्येक सत्रार्द्ध में व्याख्यानों के साथ प्रायोगिक सत्र भी होंगे | इसमें हस्तलेखों को पढ़ने का अभ्यास , लिपियों का अभ्यास , सूचीपत्र (कैटेलाग) निर्माण का प्रशिक्षण , सेमिनार , प्रोजेक्ट कार्य ,प्रदत्तकार्य तथा अन्य प्रायोगिक कार्य भी कराएं जाएंगे। कक्षा की शिक्षण गतिविधियों में छात्र सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाएगा।

[7] मूल्यांकन प्रक्रिया – (EXAMINATION AND EVALUATION)

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम अवधि में आठ प्रश्नपत्र होंगे | पाँच पत्र प्रथम सत्र में तथा तीन पत्र सैद्धान्तिक तथा दो पत्र प्रायोगात्मक/प्रदत्तकार्य/परियोजनाकार्य के रूप में द्वितीय सत्र में होंगे | प्रत्येक पत्र 100 अंक का होगा जिसमें उस पत्र से सम्बद्ध सभी विषयों में प्रश्न सम्मिलित होंगे | प्रत्येक पत्र में बहु विकल्पीय प्रश्न , अतिलघु उत्तरीय प्रश्न , लघु उत्तरीय प्रश्न तथा विस्तृत प्रश्न पूछे जाएंगे | प्रायोगिक पत्रों में लिप्यंतर , अभिलेख वाचन , परियोजना कार्य पर प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित होगा | प्रत्येक पत्र 3 घण्टे की अवधि का होगा | प्रत्येक सत्रार्द्ध के अंत में उसकी परीक्षा होगी |

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. A Bibliography of palaeography and Manuscriptology. Sweta Prajapati, Bhartiya Kala Prakashan
2. Aspects of Manuscript Studies; veda, classical Sanskrit Literature, Dharmasastra, puranas and Manuscriptology, M.L. Wadekar. Bharatiya Kala prakashan, Delhi, India
3. Bhartiya lipiyo Ki Kahani,mule.Gudaker, Rajkamal Prakashan,New Delhi,2004
4. Indian Epigraphy, . Sivaganesamurti
5. Indian Paleogeaphy,Buhler.George,
6. Indian Paleography, . Dani.P.H
7. Indian Paleography. Pandey.R.B.
8. Indoan Paleography,Dani.ahmad Hasan
9. Introduction to Indian Textual Criticism, . Katre, S.M.
10. Introduction to Manuscriptology Murthy. R.S shivaganesha Ar. Es sivaganesamortu,
11. Manuscript and Manuscriptology in India. Nandi.S.G &Palit.P.K,
12. Manuscriptology , Nayer. Key Mahesvaran
13. Manuscriptology an entrance,Jagannatha.S. Parimal Pablication PVT. LTD.
14. Manuscripts, Catalogues, Editions, . Raghavan,V
15. New lights on Manuscriptology ; a collection of articles of prof. K.V. Sharma, Sree Sarada Education Society Research Centre
16. Pandulipi Vijnan (Hindi), . Satyendra
17. Pracina Bharatiya Lipimala, . Ojha.G.H. –
18. Prolegomena Of Mahabharat,Critical Edition(Adiparva Vol.1) . Sukthankar, V.S. BORI,Poona,1936

19. Ramayana,Critical Edition s(Balakanda) Baroda.
20. Shardalipi Dipika.Tikkoo.shrinath.New Delhi,1983.
21. Shodhpravidhii avem Pandulipivijhyan ,Mishra,Abhiraj .Rajendra, Akshayavat prakaashn,Allahabad
22. The Fundamentals of Manuscriptology. Visalakshy.P.
23. The Wealth of Sanskrit manuscripts in India and abroad. . Pandurangi, K.T.

अपराजिता मिश्रा

स्नातकोत्तर डिप्लोमा- पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपिशास्त्र

विषय कोड –PGDMP

Total Credit=40

SEMESTER-1

CREDIT=20

पत्र कोड एवं विषय	पाठ्यवस्तु विवरण	क्रेडिट
	प्रथम सत्रार्ध	
PGDMP-1 L-4,T-0,P-0	**पाण्डुलिपि विज्ञान का परिचय** UNIT-1 • पाण्डुलिपिविज्ञान-परिचय • पाण्डुलिपिविज्ञान के अध्ययन का महत्त्व एवं उसके सहायक शास्त्र। UNIT-2 • पाण्डुलिपियों के विविध प्रकार एवं उनकी विशेषताएं (ताड-पत्र,भुर्ज-पत्र,साँची-पत्र,तूलीपत्र, ताम्र-पत्र,स्वर्णपत्र,रजतपत्र,पटलेख,मृतिकालेख,स्तम्भलेख,गुहालेख,शिला लेख,चर्मपत्रलेख इत्यादि) UNIT-3 • हस्तलेख संग्रह एवं सूचीकरण का इतिहास, हस्तलेख संग्रह की विधियाँ। • हस्तलेख संग्रह में संस्थाओं और विद्वानों का अवदान। UNIT-4 • पाण्डुलिपि ग्रन्थों की रचना प्रक्रिया, पाण्डुलिपि लेखन की विशिष्ट पद्धति, लेखक(लिपिकार) की विशेषताएं , लेखन सामग्री	CREDIT-4
PGDMP-2 L-4,T-0,P-0	UNIT-1 • भारत एवं विदेश में स्थित प्रमुख हस्तलेख संग्रहालय एवं डिजिटल पाण्डुलिपि संग्रहालय UNIT-2 • कैटेलाग्स के प्रकार एवं उनके निर्माण की प्रविधियाँ। • राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन एवं उसके कार्य • पाण्डुलिपि संपादन के संगणकीय प्रयोग एवं पाण्डुलिपियों के उपयोग संसाधनों तक पहुंच (access to manuscript resources)	CREDIT-4

	UNIT-3 • कैटेलागस् कैटेलागरम्,न्यू कैटेलागस् कैटेलागरम्,पाण्डुलिपि से संबद्ध पत्रिकाएं। UNIT-4 • प्रसिद्ध पाण्डुलिपिवेत्ता एवं उनके कार्य तथा समीक्षाग्रन्थ सम्पादकों का परिचय।	
PGDMP-3 L-4,T-0,P-0	UNIT-1 • पाण्डुलिपियों में काल-लेखन की विधियाँ। विविध सन्-संवत् UNIT-2 • महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का परिचय हस्तप्रतियाँ-बखशाली-पाण्डुलिपि,बोवर-पाण्डुलिपि,तुरफान-हस्तलेख,गाडफ्रे-हस्तलेख, भूर्जहस्तप्रति, होरयूजी-हस्तलेख,गिलगित-हस्तप्रति,आदिपर्व हस्तप्रति तथा अन्य पाण्डुलिपियाँ। UNIT-3 • वाल्मीकि रामायण का समीक्षात्मक संस्करण • महाभारत का समीक्षात्मक संस्करण • पंचतन्त्र का समीक्षित पाठ • अभिज्ञानशाकुन्तलम् का समीक्षात्मक संस्करण UNIT-4 • पाण्डुलिपियों के विनाश के कारण। • पाण्डुलिपियों के परिरक्षण एवं संरक्षण की विधियाँ।	CREDIT-4

PGDMP-4 **L-2,T-0,P-0**	**पुरालिपिविज्ञान-परिचय** UNIT-1 • लेखन कला का इतिहास। UNIT-2 • भारतीय लिपियों का उद्गम और विकास तथा उनका महत्त्व UNIT-3 • ब्राह्मी लिपि का परिचय – क्रमिकविकास एवं विस्तार, • खरोष्ठी लिपि परिचय। UNIT-4 • शारदा लिपि एवं ग्रन्थलिपि परिचय,महत्त्व,विस्तारक्षेत्र एवं विकासक्रम।	CREDIT-4
PGDMP-5 **L-1,T-0,P-3**	UNIT-1 • ब्राह्मी(अनिवार्य) एवं खरोष्ठी लिपि(विकल्प) का अभ्यास। UNIT-2 • शारदा(अनिवार्य) एवं ग्रन्थ लिपि(अनिवार्य) का अभ्यास। • नन्दीनागरी(अनिवार्य) तथा नेवारी लिपि(विकल्प) का परिचय एवं अभ्यास। UNIT-3 • लिप्यन्तरण अभ्यास,पाण्डुलिपि वाचन अभ्यास, UNIT-4 • अभिलेख-वाचन का अभ्यास (गिरिनार शिलालेख,प्रयाग-प्रशस्ति,भट्टिप्रोलू अभिलेख तथा अन्य लेख)	CREDIT-4

	द्वितीय सत्रार्ध SEMESTER-2	CREDIT=20
PGDMP-1 L-4,T-0,P-0	**पाठालोचन-परिचय** UNIT-1 • पाठालोचन – परिभाषा,उद्देश्य,आवश्यकता एवं सम्भावना ।पाण्डुलिपि संपादन एवं पाठालोचन में संबन्ध। UNIT-2 • समीक्षात्मक पाठ संपादन का शोध शाखा के रूप में विकास का इतिहास। **UNIT-3** • पाठसंपादन के मूलभूत अंग एवं पाठालोचन के सिद्धान्त UNIT-4 • पाठ के विविध प्रकार • पाठदोष – कारण एवं निराकरण	CREDIT-4
PGDMP-2 L-4,T-0,P-0	**पाठसंपादन के अंग** **UNIT-1** • समीक्षात्मक पाठ संपादन का महत्त्व एवं प्रक्रिया । • संचरित पाठ (Transmitted text) UNIT-2 • ग्रन्थ संपादन में प्रयुक्त पारिभाषिक पदों का विवरण- apparatus criticus,archetype,autograph,codex,collation,colophon, constituted text, critical recension,Heuristics,hyparchetype,Pedigree,Recension, Urtext,stemma codicum etc. • पाठ - संस्कार (Heuristics/ Recensio) • पाठ संशोधन (Emendation) UNIT-3 • समीक्षात्मक पाठ संपादन की प्रविधियाँ • निम्नतर पाठ समीक्षा (Lower criticism) • उच्चतर पाठ समीक्षा (Higher criticism)	CREDIT-4

	UNIT-4 • समीक्षात्मक पाठ संपादन में समस्याएं,एकल मातृका संपादन • हस्तलेख वंशवृक्ष निर्माण (Genealogy of manuscript) • पाठालोचन सिद्धान्तों के आधार पर संपादित प्रमुख संस्कृत ग्रन्थों का परिचय	
PGDMP-3 **L-1, T-0, P-0**	**पुरालिपिशास्त्र (practical)** UNIT-1 • मोडी,तिगलारी, तेलगु लिपियों का अभ्यास।(किन्हीं दो का) UNIT-2 • मलयालम,कन्नड तमिल लिपियों का अभ्यास (किन्हीं दो का) UNIT-3 • ,उडिया,बंगला तथा गुजराती लिपियों का अभ्यास(किन्हीं दो का) UNIT-4 • मैथिली,प्राचीननागरी,टाकरी लिपियों का अभ्यास (किन्हीं दो का)।	Credit-4
PGDMP-4 **L-0,T-0,P-2**	UNIT-5 • किसी एक लिपि के लघु हस्तलेख का लिप्यन्तरण UNIT-6 • हस्तलेखवाचन,अभिलेखवाचन,डिजिटल कैटेलाग निर्माण का प्रशिक्षण	Credit-2
PGDMP-5 **L-0,T-0,P-6**	**इन्टर्नशिप** • लघु पाण्डुलिपि के संपादन का अभ्यास / परियोजना कार्य	CREDIT-6

प्रथम सत्रार्ध - 05 पत्र (4x5=20 क्रेडिट)
द्वितीय सत्रार्ध - 03 (सैद्धान्तिक पत्र)+02 (प्रायोगात्मक पत्र) (4+4+4+2+6=20 क्रेडिट)
कुल - 08 (सै० पत्र)+02 (प्रायोगात्मक/प्रदत्तकार्य/परियोजनाकार्य)
क्रेडिट - 40 क्रेडिट (20 +20= 40 क्रेडिट)

अपराजिता मिश्रा

DEPTT.OF MANUSCRIPTOLOGY & PALEOGRAPHY
CSU,G.N.JHA CAMPUS, PRAYAGRAJ